आज का पुरुषार्थ, 21 April 2022

From: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज स्वयं को संसार के सबसे भाग्यवान आत्मा समझते हुए पूर्वज बन सभी को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देने का सेवा करेंगे "*

भगवानुवाच .. " **मैं तुमको स्वर्ग का भगवान भगवती बनाता हूँ, इतना बड़ा पद देता हूँ, तो तुम मेरी बात तो मानो** "

भगवान कितने प्यार से हम आत्माओं को सम्मान देते हुए समझाते है ...

" **मैं तुम्हारे लिए कल्याणकारी हूँ**, मैं जो भी तुम्हे कहता हूँ उसमें तुम्हारा ही कल्याण निहित है , मेरी बात मानो और दुनियावी सभी झंझटों से बुद्धि निकलकर **देही-अभिमानी** बनने का पुरुषार्थ करो।

इससे ही तुम वर्तमान में भी बहुत सुखी रहेंगे और जन्म जन्म तुम्हारे **सुखों** के भण्डार **भरपूर** रहेंगे। तुम इस संसार में सबसे अधिक **सम्पत्तिवान** हो।

क्योंकि तुम्हारे पास ही **ज्ञान रत्नों का खजाना है।** अपने सम्पत्ति को देख देख कर हर्षित रहो। बार-बार देखो कितना ज्ञान धन अपने पास है। लिखते चलो, बाबा ने तुम्हें क्या क्या ज्ञान का खजाना दिया है? "

सौ बातें निकल आयेंगे। नशा चढ़ेगा इतना ज्ञान का **खजाना**! जो सारे संसार में भी सब लोगों से मिला लिया जाये। तो उनके पास भी इतना नहीं है जितना मेरे पास है।

तो हम बहुत सम्पत्तिवान है। हमें अपनी सम्पत्ति से जग का कल्याण करना है। क्योंकि हम **पूर्वज** भी है। सबके पालना करने वाले। और हमें ही बाबा **विश्वकल्याण** का महान कार्य भी सौंपा है।

हम इस महान कार्य को ज़रा रियेलाइज करे, **स्वीकार करे** ...

" हम विश्वकल्याणकारी है .. हमें ही बाबा से विश्वकल्याण की शक्तियाँ, ज्ञान, सदविवेक, सदगुण प्राप्त हुए है "

संसार दुःखों की अग्नि में जलता जा रहा है। मानसिक बीमारी, पीढ़िया बढ़ती जा रही है। सम्बन्धों में जहर घुलता जा रहा है। ऐसा लगता है जैसे कि कोई भी किसी का नहीं रह जायेगा।

कुछ ही समय में हर मनुष्य अपने को अकेला पायेगा। और उसे लगेगा, जिससे बहुत प्यार करते रहे, जिसके मोह में जकड़ते गये वह तो अपने है ही नहीं।

तो हम **विश्वकल्याण** के कार्य में लग जाये। **सकाश भी दे।** कोई भी धर्म की आत्मा जब मिले तो हमें याद रहे यह हमारे ही **वंशावली** है। इसलिए उनसे नफरत वा घृणा भाव नहीं करे।

वो पथ विमुख हुए अपने अज्ञानता के कारण। वो कुछ लोगों के बहकावे में आकर विरोधी बने है। लेकिन वो सब हमारे ही **वंशावली** है।

चाहे कोई किसी भी धर्म को मानने वाला क्यों न हो। वह शाखायें तो निकली हम से ही। और कहीं न कहीं **अच्छाईयों** के बीज भी उनमें है। उन्हें अंकुरित करके बाहर निकालना है।

तो हम **श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देकर उनकी मदद किया करे।** अगर हमारे मन से घृणा भाव, थोड़ा वैर भाव उन आत्माओं के लिए जाता है, तो उनकी जो

श्रेष्ठ वृत्तियाँ है, जो शुभ भावनायें है वह भी दब कर नष्ट हो जाते है। और संसार में हिंसा का वातावरण बनता है।

हमें अहिंसा का माहौल बनाना है। सभी को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देकर। तो हम ज्ञान रत्नों के भण्डारी है। इस संसार में सबसे अधिक धनवान। आख खुलें सवेरे, तो अपने को याद दिलाये ...

" मेरे जैसा भाग्यवान , मेरे जैसा सम्पत्तिवान , इस संसार में और कोई नहीं है "

यह नशा हमारी सोई हुई चेतना को जगा देगा। और फिर आज सारा दिन इस स्मृति में रहेंगे ...

" मैं बहुत-बहुत भाग्यवान, बहुत धनवान हूँ .. सभी धर्मों की आत्माओं का पूर्वज हूँ .. मेरे पुण्य कर्मों का .. मेरी पवित्रता का .. मेरी श्रेष्ठ स्थिति का बल .. सारी संसार की आत्माओं को मिलता है "

तो पूर्वज बनकर आज बींच बींच में उन्हें सकाश देते रहेंगे और फ़ील करेंगे ... " **हमारे श्रेष्ठ वायब्रेशन्स सभी आत्माओं का कल्याण कर रहे है** "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org